18 सतत् विकास
(Sustainable Development)

भूमिका *(Introduction)*

"अंतिम वृक्ष को काट दिये जाने के बाद.....
अंतिम नदी को विषाक्त करने के बाद.....
अंतिम मछली पकड़ लिये जाने के बाद.....
हम पाएंगे कि पैसे को खाया नहीं जा सकता है।"

उपर्युक्त वाक्य पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार की वार्षिक रिपोर्ट 2015–16 के मुख पृष्ठ पर अंकित है। ये सतत् विकास की आवश्यकता को बेहतर ढंग से निरूपित करते हैं। ये संदेश देते हैं कि आर्थिक प्रगति तभी संपोषणीय हो सकती है, जब पर्यावरण और विकास में बेहतर संतुलन हो। यह स्पष्ट कर देता है कि आर्थिक प्रगति की भी अपनी सीमाएँ हैं। पर्यावरणीय संसाधनों के अतिदोहन से भले ही अल्पकालिक समृद्धि दिख जाती हो किंतु दीर्घकाल में यह विनाश को ही बुलावा देता है। यही कारण है कि आज सतत् विकास का मुद्दा राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय चर्चा का विषय बना हुआ है।

सतत् विकास एक प्रकार से समाज, पर्यावरण तथा अर्थव्यवस्था का संतुलित एकीकरण है। सतत् विकास इस तरह से होता है कि यह व्यापक संभावित क्षेत्रों, देशों और यहाँ तक कि आनेवाली पीढ़ियों को भी लाभ पहुँचाता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो हमें निर्णय करते समय समाज, पर्यावरण तथा अर्थव्यवस्था पर उसके संभावित प्रभावों का विचार कर लेना चाहिये। हमें यह ध्यान रखना चाहिये कि हमारे निर्णय एवं कार्य दूसरों को प्रभावित करते हैं तथा हमारे कार्यों का भविष्य पर भी प्रभाव पड़ता है। महात्मा गांधी का एक कथन है– *"इस पृथ्वी पर सभी की आवश्यकता की पूर्ति के लिये सब कुछ है पर एक भी व्यक्ति के लालच के लिये कुछ भी नहीं।"*

आर्थिक और औद्योगिक विकास इस तरह से होने चाहियें जिससे पर्यावरण को कोई भी ऐसी क्षति न हो जिसकी भरपाई न की जा सके।

संक्षेप में **सतत् विकास ऐसा विकास है जो आने वाली पीढ़ियों के हितों से समझौता किये बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करता है।**

यह परिभाषा दो महत्त्वपूर्ण बातों को उजागर करती है– पहली, प्राकृतिक संसाधन न केवल हमारे जीविकोपार्जन के लिये ज़रूरी हैं, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के जीविकोपार्जन के लिये भी उतने ही आवश्यक हैं। दूसरी, वर्तमान में किसी भी प्रकार के विकास–संबंधी कार्यों को करते समय उसके भविष्य में आने वाले परिणामों को ध्यान में रखना आवश्यक है। संक्षेप में इस परिभाषा में 'आवश्यकता' और 'भावी पीढ़ियाँ, दो महत्त्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं। आवश्यकता की अवधारणा का संबंध संसाधनों के वितरण से है। इसका तकनीकी अर्थ है–

"सभी की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति और एक अच्छे जीवन की आकांक्षाओं की संतुष्टि के लिये सभी को अवसर प्रदान करना।" सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये संसाधनों के पुनर्वितरण की आवश्यकता होगी। इसलिये यह एक नैतिक प्रश्न है। एडवर्ड बारबियर ने सतत् विकास की परिभाषा बुनियादी स्तर पर गरीबों के जीवन के भौतिक मानकों को ऊँचा उठाने के संदर्भ में दी है। परिभाषा में भावी पीढ़ियों के लिये संसाधनों की सतत् उपलब्धता की बात भी की गई है। हमें आगामी पीढ़ियों के लिये सुरक्षित पर्यावरण और अच्छी गुणवत्ता वाली परिसंपत्तियों का भण्डार छोड़ना ही चाहिये, क्योंकि हमें भी यह उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त हुआ था। इस प्रकार सतत् विकास संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग का एक नैतिक आग्रह है।

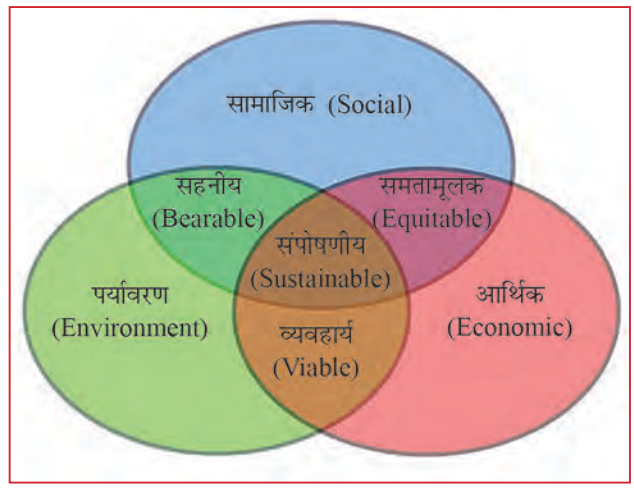

सतत् विकास की संकल्पना *(Concept of Sustainable Development)*

पिछली दो शताब्दियों से मनुष्य ने काफी भौतिक और आर्थिक प्रगति की है परंतु यह प्रगति किस कीमत पर हुई है? क्या आर्थिक विकास के क्रम में पर्यावरण और उसके परिणामस्वरूप मनुष्यों पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों को ध्यान में रखा गया? और अंत में क्या इस प्रगति का लाभ सभी लोगों को एकसमान रूप से मिला या उन